

P-1	R.M.M. Law College - Saharsa.
Mamveshtra Mamlat	Contract - 1
Part time Lecturer	Part - 1

धारा 7. प्रतिग्रहण आत्यन्तिक होना ही चाहिए

(Acceptance must be absolute)

धारान्त एक निश्चिमान्य प्रतिग्रहण की दो अनिवार्य शर्तों का उल्लेख करती है प्रस्थापना को वचन में परिवर्तित करने के लिए प्रतिग्रहण -

① आत्यन्तिक एवं बिना किसी शर्त का होना चाहिए
 ② उसी प्राथिक और व्यक्तिगत प्रकार से अभिव्यक्त किया जाना चाहिए

① प्रतिग्रहण आत्यन्तिक एवं बिना शर्त के होना चाहिए → किसी प्रस्थापना को वचन का रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि उसका प्रतिग्रहण आत्यन्तिक एवं शर्त रहित ही अर्थात् प्रस्थापना को बिना किसी फेरफार के उसी रूप में और वही शर्तों के अन्तर्गत प्रतिग्रहीत किया जाना चाहिए जो कि उसमें निहित है। अतः तक कोई प्रतिग्रहण आत्यन्तिक नहीं होता, तक तक यह माना जाता है कि कार्रवाई का दौर चल रहा है और पक्षकारों के बीच कोई विधिक दायित्व उत्पन्न नहीं हुआ है।

उदाहरणार्थक अपनी एक घड़ी को 200 रुपयों में बेचने की खरी प्रस्थापना करता है। खरी उसे 200 रुपयों में लेने को तैयार हो जाता है। यह मान्य एवं आत्यन्तिक प्रतिग्रहण है। लेकिन खरी यदि उसे 150 रुपयों में खरीदने की बात कहता है तो यह प्रतिग्रहण आत्यन्तिक नहीं होगा।

एक मामले में उच्चतम न्यायालय द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया है कि जहाँ पक्षकारों के बीच शर्तों पर खर्च नहीं हुई हो वहाँ खर्च पूर्ण, काबूकद एवं

प्रवर्तनीय नहीं मानी जा सकती।

मिली-जुली प्रस्थापना - मिली-जुली प्रस्थापना में, जिसमें उद्योग हर एक भाग-एक दूसरे पर निर्भर हो; यदि उसके किसी एक भाग को प्रतिगृहीत किया जाता है तो ऐसा प्रतिग्रहण ~~व्यवस्था~~ नहीं होगा।

प्रति-प्रस्थापना - प्रस्थापना एवं प्रतिग्रहण के सम्बन्ध में एक प्रचलित शब्द है - प्रति-प्रस्थापना।

अब किसी प्रस्थापना को फेरफार अथवा परिवर्तन के साथ प्रतिगृहीत किया जाता है, तो यह प्रति-प्रस्थापना कहलाती है। दूसरे शब्दों में, मूल-प्रस्थापना का प्रतिक्षेपण प्रति-प्रस्थापना है। ऐसी प्रति-प्रस्थापना को संविल का रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि उसे मूल प्रस्थापना द्वारा प्रतिगृहीत कर लिया जाय। प्रति-प्रस्थापना के निर्माहित महत्वपूर्ण उदाहरण हैं -

(i) अर्द्ध जौ या गेहूँ के विक्रय की प्रस्थापना को इस शर्त के साथ प्रतिगृहीत किया जाता कि उत्तम जौ या गेहूँ का परिधान किया जायगा।

(ii) चावल के विक्रय की प्रस्थापना को इस शर्त के साथ प्रतिगृहीत किया जाता कि पीले और भीगे हुए चावल स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

(iii) लीम के लिए प्रस्थापना के प्रतिग्रहण की इस शर्त के साथ प्रतिगृहीत किया जाता कि वह तब-तक प्रभानी नहीं होगा जब तक कि प्रथम प्रीमियम का संदाय नहीं कर दिया जाता। यदि

अस्थायी प्रतिग्रहण - किसी प्रस्थापना का अस्थायी प्रतिग्रहण ~~व्यवस्था~~ नहीं होता। नीलाय विक्रय में एक बौली के अस्थायी प्रतिग्रहण को आत्मनिकु ~~व्यवस्था~~ नहीं माना जाता। बंधु सम्बन्धों में श्रेष्ठ अर्थात् उड़ीया बनाम हरिनक्षत्रण सम्बन्धों का एक महत्वपूर्ण मामला है। इसमें उच्चतम न्यायालय द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया है कि नीलाय द्वारा विक्रय में बौली का अस्थायी प्रतिग्रहण

नहीं होता।

P-3 धारा-7 प्रतिग्रहण आत्यधिक होगा ही चाहिए।

(9) प्रायिक और युक्तिमुक्त प्रकार से अनिश्चित किया जाना →

इस धारा के खण्ड (ख) में प्रतिग्रहण की रीतियों का उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार

(1) जहाँ प्रत्यापना में उसके प्रतिग्रहण की किसी विशेष रीति का उल्लेख किया गया है, वहाँ उसे उसी रीति से किया जाना चाहिए। एवं

(2) जहाँ ऐसी किसी रीति का उल्लेख नहीं है वहाँ उसे प्रायिक और युक्तिमुक्त प्रकार से अनिश्चित किया जाना चाहिए।

उदाहरणार्थ - यदि प्रत्यापना में यह कहा गया है कि उसके प्रतिग्रहण की संयुचना तार द्वारा की जाय तो ऐसी संयुचना तार द्वारा ही की जानी चाहिए। डक द्वारा की गई संयुचना से संयुक्त का गठन नहीं होगा। लेकिन ऐसी किसी निश्चित रीति के अभाव में संयुचना मौखिक रूप से शब्दों द्वारा या लिखित में या आचरण द्वारा की जा सकती है। यह ब्रह्म प्रायिक और युक्तिमुक्त तरीका है। यदि प्रतिग्रहण प्रत्यापना में निश्चित रीति में न किया जाकर किसी अन्य रीति से किया जाता है तो प्रत्यापक युक्तिमुक्त समय के भीतर प्रतिग्रहण को निश्चित रीति में किये जाने के लिए आग्रह कर सकता है। युक्तिमुक्त समय क्या है, यह एक तथ्य का प्रश्न है जो प्रत्येक मामले की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। प्रतिग्रहण का युक्तिमुक्त समय में किया जाना - प्रतिग्रहण का युक्तिमुक्त समय में किया जाना भी आवश्यक है। ऐसा तब आवश्यक है जब प्रतिग्रहण के लिए कोई समय निर्धारित नहीं किया गया हो। किसी भी प्रत्यापना के प्रतिग्रहण को अनिश्चित समय के लिए शुणा नहीं रखा जा सकता है।